RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-5* January- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बदलते पारिवारिक परिदृश्य में समकालीन कथा साहित्य का योगदान

सुनीता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
ब्रह्मावर्त पी0जी0 कालेज,
मन्धना, कानपुर नगर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

समकालीन कथा साहित्य ने जीवन के विभिन्न स्तरों पर तीव्र गति से बहने वाले अन्धड़ को पहचानकर आज के दुर्दान्त कष्ट को झेलने वाले मध्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग के केन्द्रीय पात्रों के द्वारा जीवन के यर्थाथ को उजागर करने का अथक प्रयास किया है। ग्रामीण और नगरीय एवं महानगरीय जीवन की परिवर्तित सामाजिक स्थितियों दशाओं तथा सम्बन्धों का प्रमाणिक चित्रण किया है। पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के बीच के संघर्ष को भी दर्शाया गया है। नारी चेतना के विकास को वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए कहा जा सकता है कि दाम्पत्य जीवन की टूटन–घुटन और सम्बन्धों मे आयी जड़ता आदि के बीच एक तीसरे के प्रवेश ने तोड़ा है।

मुख्य शब्द : विभाजन, मोह भंग, यान्त्रिकता, पारिवारिक विघटन, राजनीतिक भ्रष्टाचार।

प्रस्तावना

आज का मानव जीवन संशय, द्वेष, सन्देह द्वन्द और असुरक्षा से अधिक अमानवीय होने लगा है। वैज्ञानिक यांत्रिकता और औद्योगिक उपलब्धियां अपनी सम्पूर्ण सुरक्षात्मक सुविधाओं में भी मानव जीव के समसामयिक त्रासदी को और भी त्रासद बनाने लगी है। ऐसे परिवेश में व्यक्ति के व्यक्तित्व का विखण्डन हुआ है। आधुनिक नारी को दिशा निर्देश अथवा आलोचना के लिए उठी उंगली सहन नही है। आधुनिक शिक्षा–दीक्षा, आर्थिक सामाजिक स्वतन्त्रता से स्त्री आत्मनिर्भर हो रही है। उसके जीवन और परिवेश तनावों से उत्पन्न आतंरिक और बाह्य संघर्ष पुरूष के आदिम अहम से टकराकर नये सम्बन्धों की सृष्टि कर रहे है। परिणामस्वरूप परिवार के टूटन की प्रक्रिया पति पत्नी के दाम्पत्य जीवन को भी त्रासद बना रही है। इसलिये मध्यम वर्गीय परिवार की कुढ़न, घुटन, टकराहट की त्रासदी समकालीन कहानियों की मुख्य संवेदना है। भीष्म साहनी की कहानी 'कटघरे की दिव्या' गिरिराज किशोर की 'फ्राक वाला घोड़ा' मुंशी प्रेमचन्द्र की 'कफन', 'पूस की रात' 'ठाकुर का कुआँ', सद्गति, शतरंज के खिलाड़ी, फनीश्वर नाथ रेणु की, ठेस, तीसरी कसम, उच्चाटन, जैसी कहानियाँ, बिलासिया से राम बिलास सिंह के रूप में अपनी पहचान को मनमाने और मरकट साहूकार के महाजनी गन्दगी के कीटाणुओं को अपने दरवाजे से हटवाने तथा उसे धिक्कारने के साहस के साथ उसके खिलाफ तनकर खड़े होने की चेतना को शह देने में लगी हुई थी।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक भ्रष्टाचार का स्रोत राजनीति है। समकालीन कहानी में राजनीति में फैले भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, छल–छदम्, भाई–भतीजावाद, जातिवाद, क्षेत्रीयतावाद नेताओं के दोहरे भ्रष्ट चरित्र, राजनीतिक मोह भंग, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद विषयों पर केन्द्रित कहानियां भी लिखी है। राजनीतिक लाभ के लिए स्त्रियों के प्रयोग की स्थितियों को जनवादी रचनाकारों ने अपनी कहानियों का विषय बनाया है।

पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी पर अपना अधिकार जमाये रखना चाहती है तो नई पीढ़ी स्वतंत्रता से अपने पथ पर चलने को आतुर है। परिणामस्वरूप दोनो में संघर्ष की सनातन स्थिति रही है। इस नयी और पुरानी पीढ़ी के संघर्ष को भीष्म साहनी के 'कटघरे' शशि प्रभा शास्त्री के कहानी संग्रह अनुत्तरित की कहानियॉ दो पीढ़ियों के संघर्ष को दिखाती है।

आज के बदलते पारिवारिक परिदृश्य में नारी ने परिवार के बीच पुरूष के प्रभुत्व को चुनौती दी है। चुनौती की यह मुद्रा कहानियों का कथ्य बनी है। आज की कहानियाँ जीवन में निहित अन्तरविरोध, संक्रान्ति अथवा क्राइसिस को पकड़ने की कोशिश करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोधार्थी का इस विषय पर शोध करने का मुख्य उद्देश्य समाज में फैली बुराइयों का मानव जीवन में आने वाले अनेक प्रकार के उतार–चढ़ाव और उसमें व्याप्त संशय, द्वेष, सन्देह, द्वन्द और असुरक्षा से अधिक से अधिक अमानवीकृत होते परिवेश का चित्र उकेरने की कोशिश।

ग्रामीण और नगरीय एवं महानगरीय जीवन की परिवर्तित समाजिक स्थितियों, दशाओं तथा सम्बन्धों का चिन्तन दाम्पत्य जीवन में फैली अनेक विसंगतियों को दूर करने का प्रयास।

मध्यम वर्गीय परिवार की टूटन, कुढ़न, घुटन, टकराव की त्रासदी को समाज तक पहुंचाने का प्रयास, स्वतन्त्र भारत में सशक्त नारी का चिन्तन और स्वरूप को दर्शाना।

नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच के अन्तर्द्वन्द को समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व के निर्वहन का बोध।

साहित्यावलोकन

मुंशी प्रेमचन्द्र (पूस की रात) हिन्दी साहित्य के अग्रणी एवं युगद्रष्टा रचनाकार प्रेमचन्द्र अपनी लेखनी के माध्यम से न सिर्फ साहित्य जगत् को समृद्ध किए बल्कि वे उन हजारों आत्माओं की आवाज भी बने, जिनकी वाणी सामंती वर्ग के शोषण के बीच दबकर रह गई। यथार्थवाद के चरण में प्रवेश करते हुए वे विशेषतः कृषक वर्ग के हिमायती बने। यू तो 'पूस की रात' 1930 ई0 की रचना है किन्तु किसानों की स्थिति आज भी यथावत बनी हुई है।

प्रेमचन्द्र (कफन) कफन कहानी सर्वहारा वर्ग के दर्द, शोषण, उत्पीड़न के साथ उनके मन में सामंती वर्ग के प्रति उत्पन्न सूक्ष्म मनोभावो को भी उद्घाटित करती है। साथ ही यह दर्शाती है कि आर्थिक अभाव किस प्रकार मनुष्य को संवेदनहीन बना देता है। प्रेमचन्द्र ने समाज सापेक्ष अनुभवों को शब्द बद्ध कर समाज के दिशा प्रदान करने की कोशिश की है।

उषा प्रियंवदा (वापसी) उषा प्रियंवदा ने इस कहानी के माध्यम से पिता–पुत्र और पति–पत्नी के आपसी सम्बन्धों के बिखराव का सजीव चित्रण किया है।

फणीश्वरनाथ नाथ रेणु (ठेस) रेणु जी का कथात्मक संसार विषय वस्तु के विस्तार और कलात्मकता दोनो ही दृष्टियों से विशिष्ट स्थान रखता है। रेणु जी ने आंचलिकता को एक जीवित, स्पंदित सत्ता के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न किया है। फणीश्वरनाथ रेणु का कथा साहित्य यथार्थवादी दृष्टिकोण पर आधारित है

निष्कर्ष

अंततः इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन रचनाकारों ने समाज की सभी विसंगतियों पर अपनी यथार्थ लेखनी चलायी है। आज के समय में मनुष्य जितना स्वार्थी प्रवन्चनापूर्ण और मूल्यहीन हो गया है। वह न तो सच्चा प्रेमी है और न सच्चा पति, जो वह दिखता है वह ढोंग है। वास्तविकता यह है कि वह किसी का कुछ भी नही रह गया है। न पति, न प्रेमी, न पिता न पुत्र यहां तक की उसे मनुष्य कहने में भी संकोच होता है। समकालीन कथाकारों ने नारी शोषण के विभिन्न परिपार्श्व इन कहानियों में चित्रित किये है।

समकालीन कहानी समकालीन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर आधारित विभिन्न विषयों को लेकर लिखी गयी है। रचनाकारों ने जिस विघटन और संकट के कुहासे को झेला है तथा पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सभी स्तरों पर जिस बोध को आत्मसात किया है, उस सत्य की जीवन्त और सार्थक अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में हुई है। आज का व्यक्ति परम्परागत रूढ़ मान्यताओं को झटके से तोड़ देने को व्याकुल है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रेमचन्द्र मुंशी (2005) कहानी संकलन, एपसाइलन पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, कानपुर, पृष्ठ सं0 30*
2. *भदौरिया शिवबहादुर सिंह, (2007), हिन्दी कहानी पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर पृ0सं0 18*
3. *प्रियंवदा उषा (2005) कहानी संकलन, एपसाइलन पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, कानपुर, पृ0सं0 60*
4. *रेणु फणीश्वनाथ (1959) कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ0सं0 61*
5. *कालिया ममता (1980) प्रेम के अलावा, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिल्ली, पृ0सं0 24*